विविध विषयों पर बजरंग मुनि जी के महत्वपूर्ण विचार

1–मोदी में दिख रहे गांधी –

नरेंद्र मोदी जी ने 'मन की बात' का सौवां संदेश के माध्यम से भारत में सकारात्मक दिशा में कार्य कर रही प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया। मेरे विचार से नरेंद्र मोदी राजनैतिक तथा सामाजिक दोनों दिशाओं में एक साथ आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। स्वतंत्रता के पूर्व गांधी भी इसी तरीके से संतुलन बनाकर काम कर रहे थे। एक तरफ नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचार तथा सांप्रदायिकता के विरुद्ध राजनैतिक लड़ाई लड़ रहे हैं वहीं दूसरी ओर साफ–सफाई तथा बच्चों के मानसिक विकास का भी संदेश दे रहे हैं। अब तक की गतिविधियों से यह स्पष्ट होता है कि नरेंद्र मोदी, गांधी से भी आगे निकल सकते हैं। जहां सभी विपक्षी दल मुस्लिम तुष्टिकरण तथा जातिवाद के सहारे अपना राजनैतिक अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं वहीं मोदी विश्व भर में हिंदुत्व की एक नई अवधारणा प्रसारित–प्रचारित कर रहे हैं।

यह सब होने के बाद अभी भी मोदी जी को बहुत कुछ करना बाकी है। अब तक जातिवाद के विरुद्ध कोई ठोस काम नहीं हुआ। हमें समान नागरिक संहिता की भी संकीर्ण परिभाषा से आगे जाना चाहिए। श्रम मूल्य पर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है। इन सब दिशाओं में आगे बढ़कर नरेंद्र मोदी गांधी से आगे निकल सकते हैं। वैसे अभी कुछ अंतिम रूप से तो नतीजा घोषित करना जल्दबाजी होगी क्योंकि गांधी का जीवन पूरा हो चुका है और मोदी जी का अभी मध्यकाल है फिर भी मोदी सफलतापूर्वक गांधी की दिशा में बढ़ रहे हैं इतना मेरी समझ से स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

2–सभी अच्छे लोगों कि एकता की आवश्यकता –

तीस वर्ष पूर्व हम लोगों ने मिलकर गांधीवादी तथा सावरकरवादियों के बीच टकराव समाप्ती की आवश्यकता की पहल शुरू की थी, जिसके बहुत अच्छे परिणाम आये। यह बात कुछ मित्रों को ठीक नहीं लगी, स्वभाविक भी है, लेकिन आपको आत्म अवलोकन करना होगा कि क्या आप वास्तव में गांधीवादी है या आप गांधी के नाम पर दुकानदारी कर रहे हैं। आप नाम तो अहिंसा का लेते हैं लेकिन दिन–रात नक्सलवादियों और मुस्लिम कट्टरवाद का समर्थन करते रहते हैं। गांधी श्रम सम्मान के पक्षधर थे, लेकिन आप लगातार कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि के विरुद्ध रहते हैं। गांधी स्वालंबन के पक्षधर थे और आप दिन–रात स्वावलंबी भारत के विरुद्ध खड़े रहते हैं। गांधी लोक स्वराज्य के पक्षधर थे लेकिन आप कभी लोक स्वराज्य के पक्ष में खड़े नहीं दिखते। आपके गांधीवाद की कसौटी क्या है?

सावरकरवादियों का हाल भी कम खराब नहीं है। भारत के अधिकांश सावरकरवादी संजय गांधी के प्रशंसक रहे, इंदिरा के आपातकाल तक की ये प्रशंसा करते हैं। ये स्वयं को

सावरकरवादी कहते हैं किंतु है पूरी तरह हिटलरवादी। इनके अनेक कार्यकर्ता तो रूस के युक्रेन पर आक्रमण को भी ठीक मानते हैं। ये अपने को संघ का कार्यकर्ता कहते हैं किंतु मोहन भागवत, मोदी तक की आलोचना को अपनी बहादुरी समझते हैं। कैसे सावरकरवादी हो आप? इसीलिए मैंने यह मार्ग बताया है कि अतिवादी होना ठीक नहीं। बहुत वर्षों तक आप एक दूसरे के खिलाफ गांधी या सावरकर को गाली देते रहें और बदले में मिला आतंकवाद और बढ़ता भ्रष्टाचार। अच्छा हो कि अपनी अनावश्यक मूर्खता छोड़कर सभी अच्छे लोगों की एकता में मदद करो, आओ मिल–जुलकर गांधीवादी हिंदुत्व की मदद करें। अब गांधीवाद और सावरकरवाद की समाज को जरूरत नहीं है, अब जरूरत है मोदी–भागवत–वाद की।

3–संघ तथा गांधीवादियों के बीच में तालमेल –

स्वतंत्रता के बाद पूरा देश दो भागों में बंट गया। एक था गांधी विरोधी जिसमें मुख्य रुप से संघ आगे था और दूसरा था गांधी समर्थक, जिसमें गांधीवादी सबसे आगे थे। गांधी हत्या के बाद इन दोनों के बीच में टकराव हुआ। संघ पर अप्रत्यक्ष रूप से सावरकरवादियों का नियंत्रण हो गया और गांधी के पक्षधर संस्थाओं पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण कम्युनिस्टों का हो गया। गांधी समर्थक और गांधीवादियों के बीच हिंदुत्व की अवधारणा अलग–अलग थी। पूरा देश दो भागों में बंट चुका था और इन दोनों के बीच की चक्की में हिंदुत्व पिस रहा था। मैंने यह महसूस किया कि यह टकराव बंद होना चाहिए क्योंकि संघ में भी बहुत अच्छे त्यागी और तपस्वी लोग हैं और गांधीवादियों में भी ऐसे अनेक लोग हैं। इन दोनों के बीच का टकराव हिंदुत्व की अवधारणा को नुकसान कर रहा है। आज से तीस वर्ष पहले मैंने इस खतरे को समझ कर इसका समाधान शुरू किया। मैंने गांधीवादियों के कुछ अच्छे लोगों तथा संघ के अच्छे लोगों को रामानुजगंज में एक साथ बैठाकर विचारों का आदान–प्रदान शुरू किया। यह बात कम्युनिस्टों को और सावरकरवादियों को बुरी लगी। लेकिन मेरा यह प्रयत्न निरंतर चलता रहा।

इस प्रयत्न के बहुत अच्छे परिणाम दिखे और आज संघ तथा गांधीवादियों के बीच में तालमेल दिख रहा है। गांधीवादियों का एक दूसरा ग्रुप आज भी नक्सलवादी, आतंकवादी मुसलमान तथा कांग्रेस के पक्ष में दिन–रात खड़ा रहता है। सावरकरवादियों का एक गुट आज भी दिन–रात गांधी को गाली देता रहता है, लेकिन नरेंद्र मोदी के बीच बचाव से दोनों ही गुट लगातार कमजोर हो रहे हैं। अनेक गांधीवादियों का नरेंद्र मोदी को समर्थन मिल रहा है। संघ प्रमुख मोहन भागवत तो पूरी तरह मोदी के समर्थन में हैं ही। मुझे संतोष है कि गांधी और सावरकर के बीच टकराव कम होने से हिंदुत्व को बहुत लाभ होगा। यह प्रयत्न लगातार जारी रहना चाहिए। गांधी और सावरकर दोनों ही स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय थे भले ही दोनों के मार्ग अलग–अलग हो। दोनों के बीच टकराव कराकर हिंदुत्व विरोधी शक्तियां इसका लाभ उठाना चाहती है जो अब धीरे–धीरे कमजोर होती जा रही है।

4–धार्मिक ध्रुवीकरण के कारण बढ़ती अराजकता –

मुख्तार अंसारी और उसके भाई को न्यायालय से सजा हो गई है। दोनों ही किसी हत्याकांड के आरोपी थे। लेकिन जिस समय हत्याकांड के आरोप का न्यायालय में ट्रायल हो रहा था उस समय की सरकार अलग थी और ये दोनों आरोप मुक्त हो गए। अब सरकार बदल गई है और उसी हत्याकांड से संबंधित गैंगस्टर एक्ट में दोनों को सजा हो गई है क्योंकि उस समय मुख्तार और उसके भाई को सत्तारुढ़ दल का समर्थन प्राप्त था और अब गवाहों को सत्तारुढ़ दल का समर्थन मिल रहा है। कोई व्यक्ति यदि अपराधी है और मुसलमान है तो सभी राजनैतिक दल उसे अपने साथ जोड़ने की इच्छा रखते हैं और यदि उस अपराधी का मजबूत वोट बैंक भी है तब तो उसे अपना भाई मानकर उसके साथ खड़े हो जाते हैं। भारतीय जनता पार्टी और विशेषकर उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ इसके विपरीत ऐसे अपराधी मुस्लिम नेताओं के खिलाफ ताल ठोक कर खड़े हैं। स्पष्ट है कि अब न्यायपालिका से भी वामपंथी न्यायाधीशों का सफाया हो रहा है।

आज का दिन सोनिया गांधी के लिए बहुत दुखद है क्योंकि सोनिया जी मुख्तार अंसारी को विशेष महत्व देती थी। जब मुख्तार अंसारी पंजाब जेल में बंद था तो वहां की सरकार मुख्तार अंसारी को विशेष संरक्षण देती थी मुख्तार को बचाने के लिए पंजाब की सरकार ने किसी वकील को 55 लाख रुपए देना स्वीकार किया था। आश्चर्य है कि कोई सरकार इस तरह के खतरनाक अपराधी के पक्ष में वकील खड़ा करती है। अब पंजाब की सरकार बदल गई है और नई आम आदमी पार्टी की सरकार ने उस वकील को 55 लाख रुपया देना अस्वीकार कर दिया क्योंकि नई सरकार के अनुसार यह पैसा देना उचित नहीं है। सोनिया जी के ऐसे प्रिय अपराधी को इस तरह सजा हुई यह उनके लिए दुखद है। दिल्ली में किसी मुस्लिम अपराधी के मारे जाने से सोनिया जी फूट–फूट कर रोई थी यह बात भी जगजाहिर हो चुकी है। अब कर्नाटक चुनाव से भी यह बात साफ हो गई है कि कांग्रेस पार्टी पूरी तरह ध्रुवीकरण के पक्ष में है। कांग्रेस को यह विश्वास हो गया है कि अब जो भी हिंदू उसका साथ देंगे वह केवल स्वार्थ के आधार पर ही देंगे, धर्म के आधार पर नहीं और मुसलमान उसे धर्म के आधार पर वोट देगा। इसलिए कांग्रेस पार्टी अपने घोषणापत्र में मुसलमानों को धार्मिक आधार पर संरक्षण देने की बात कर रही है। मुझे ऐसा लगता है कि इस नीति से कांग्रेस पार्टी को अधिक नुकसान हो सकता है। हिंदू और मुसलमान के बीच ध्रुवीकरण से कांग्रेस पार्टी को और अधिक नुकसान हो सकता है। भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस पार्टी के इस धार्मिक ध्रुवीकरण से बहुत प्रसन्न है।

5–श्रम सम्मान के लिए विचार करने होंगे नई परिभाषाओं पर–

बुद्धिजीवियों ने श्रम शोषण के कई तरीके निकाले। गांधी ने इसका समाधान सुझाया था लेकिन गांधी के मरते ही नेहरू, अंबेडकर तथा अन्य बुद्धिजीवियों ने उस योजना को पलट दिया और पूरी दुनिया की तरह भारत में भी श्रम को धोखा देने के लिए एक मई को श्रम सम्मान दिवस

घोषित कर दिया।

सच्चाई यह है कि एक मई श्रम शोषण दिवस है श्रम सम्मान दिवस नहीं। एक मई के पहले पूंजीपति लोग स्वतंत्रतापूर्वक श्रम और बुद्धि दोनों का शोषण करते थे। एक मई के बाद बुद्धिजीवी भी पूंजीपतियों के साथ हो गए और उन्होंने श्रम की परिभाषा ही बदल दी। आज हम भारत में देख रहे हैं कि श्रम का मूल्य 250 रुपए घोषित है और उसमें भी रोजगार की पूरी गारंटी नहीं है परिवार के एक सदस्य को 250 रुपए में वर्ष में 100 दिन रोजगार की गारंटी दी गई है।

दूसरी ओर कुशल श्रमिक और शिक्षित बेरोजगार नाम से श्रमजीवियों में घुसपैठ करने के लिए बुद्धिजीवियों ने एक नया तरीका खोज लिया। अब बुद्धिजीवी अपने को बेरोजगार कहते हैं। 250 रुपए से कम में काम कर रहा मजदूर रोजगार प्राप्त माना जा रहा है तथा 500 रुपए में भी काम करने के लिए जो मजदूर तैयार नहीं है वह बेरोजगार माना जा रहा है। यहां तक कि डॉक्टर या इंजीनियर 1000 रुपए रोज पर काम करने को तैयार नहीं है लेकिन बेरोजगारी भत्ता लेने में उन्हें शर्म नहीं आ रही है। यह एक मई वास्तव में बुद्धिजीवियों द्वारा श्रम शोषण का हथियार बन गई है।

सरकार को चाहिए कि वह भले ही श्रम का मूल्य 250 रुपए से भी कम घोषित कर दें लेकिन प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार की गारंटी अवश्य दी जाए। बेरोजगारी की परिभाषा बदल दी जाए और उसे मानवीय श्रम के साथ जोड़ दिया जाए। बेरोजगारी की यह परिभाषा होनी चाहिए। ”किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा घोषित न्यूनतम श्रम मूल्य पर योग्यतानुसार काम का अभाव ही बेरोजगारी मानी जाए“।

6–न्यायपालिका अपनी प्राथमिकताओं को समझे –

वर्तमान भारत में न्यायपालिका सबसे अधिक गलत दिशा में जा रही है। सर्वोच्च न्यायालय कई दिनों से इस विषय पर चर्चा कर रहा है कि समलैंगिकता को सामाजिक मान्यता कैसे मिले। यह विषय सर्वोच्च न्यायालय के विचार का नहीं है और संसद को भी इस विषय पर विचार नहीं करना चाहिए। शारीरिक संबंध यदि समाज सम्मत है तो उसे समाज सम्मान देता है। लेकिन यदि शारीरिक संबंध अप्राकृतिक या आसामाजिक है तो समाज ऐसे संबंधों को सम्मान नहीं देता यद्यपि ऐसे संबंध को समाज बलपूर्वक रोक भी नहीं सकता जब तक कोई बलात्कार न हो।

न्यायालय में सहमत सेक्स को मौलिक अधिकार माना यहां तक न्यायालय सही है और किसी असामाजिक सेक्स को समाज मान्यता दें यह सोच गलत है। भाई–बहन के बीच अगर कोई संबंध बनता है तो उसके लिए किसी को न रोका जा सकता है न ही दंडित किया जा सकता है। लेकिन समाज ऐसे असामाजिक संबंध बनाने वाले का बहिष्कार कर सकता है। संसद का जो कानून था वह इसलिए गलत है कि कानून के अनुसार ऐसे अनैतिक संबंध के लिए दंड दिया जा सकता है। अब न्यायपालिका इसलिए गलत है कि वह ऐसे संबंधों को भी सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाना चाहती है। मेरे समझ में कुछ न्यायाधीश इस मामले को एक तरफा खींच रहे हैं अन्यथा यह मामला विचार करने लायक ही नहीं है।

कल अनिल दुजाना को पुलिस ने गोली मारकर सीधा दंड दिया। देश ने इस कार्य की प्रशंसा की। अनिल दुजाना जैसे अपराधी पर हत्या, डकैती जैसे 60 मामले न्यायालय में लंबित थे और फिर भी न्यायालय ने कुछ दिन पहले ही उसको जमानत दे दी। जो न्यायालय शारीरिक संबंधों के संबंध में संपूर्ण न्याय जैसे शब्दों का सहारा लेती है वहीं न्यायालय अनिल दुजाना के मामलों में सम्पूर्ण न्याय जैसी वीटो का उपयोग नहीं करता। लगता है कि न्यायपालिका सिर्फ टाइम पास कर रही है। न्यायालय को यह समझना चाहिए कि न्यायालय या विधायिका सर्वोच्च नहीं है बल्कि सर्वोच्च तो समाज है। मैं चाहता हूँ कि न्यायपालिका अपनी प्राथमिकताओं को समझे।

7–महिला और पुरूष वर्गसंघर्ष के माध्यम से रचा जा रहा शोषण का षड़यंत्र –

जिया खान सूरज पंचोली की आवारागर्दी ने कई दिनों तक समाज में उत्तेजना फैलाई कल दस वर्ष बाद प्रारंभिक निर्णय आया है जिसमें सूरज पंचोली को निर्दोष सिद्ध किया गया है। कांग्रेस पार्टी की युवा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने वर्तमान युवा कांग्रेस अध्यक्ष पर यौन शोषण का आरोप लगाया है। कांग्रेस पार्टी ने उस महिला नेता को निलंबित कर दिया है। ऐसा ही आरोप दबंग खिलाड़ी नेता बृजभूषण शरण पर भी कुछ महिला खिलाड़ियों ने लगाए हैं। राम रहीम, आसाराम पर भी इसी हथियार का कारगर उपयोग बहुत पुरानी बात हो चुकी है। इनमें से अधिकांश घटनाएं सच हो सकती है किंतु यौन शोषण नहीं है बल्कि अधिकांश महिलाएं इस कानून का दुरुपयोग कर रही हैं।

सच्चाई यह है कि अनेक महिलाओं और पुरुषों के बीच सहमति से यौनाचार होता है और बाद में कोई विवाद होने पर इस कानून के नाम पर महिलाओं द्वारा ब्लैकमेलिंग शुरू हो जाती है। मैंने ऐसे सैकड़ों उदाहरण पाए जहां महिलाएं क्षमता से अधिक प्रगति के लिए सहमति से यौन संबंध बनाती हैं और बाद में उनके नाम पर ब्लैकमेल करती हैं। सच्चाई यह है कि वर्तमान समय में पुरुष यौन शोषण के लिए सिर्फ बदनाम है। वर्तमान समय में महिलाएं अपनी योनि को एक मजबूत हथियार के रूप में उपयोग करने की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ रही हैं। आवारा लड़के–लड़कियां विलंब से विवाह करने में अपनी शान समझते हैं और बिना विवाह के इधर–उधर संबंध बनाते हैं। वो किसी समय विवाद का रूप ले लेता है जो एक समस्या बन जाती है। मीडिया, न्यायालय तथा अन्य आवारा लोग दो गुटों में बंटकर इस घटनाओं का मजा लेते हैं। मेरा सुझाव है कि सरकार को विवाह की उम्र घटा देनी चाहिए जिससे युवक–युवतियों के बीच संबंधों की मजबूरी दूर हो सके। इसके साथ ही ऐसे कानूनों को हटा देना चाहिए जिनके आधार पर महिलाएं यौन शोषण शब्द का दुरुपयोग करती हैं। महिलाओं का यौन शोषण नहीं होता बल्कि महिलाएं ही शोषण के लिए इस शब्द का दुरुपयोग कर रही है। सबसे अच्छा तो यह होगा कि कानून में महिला और पुरुष के बीच में किसी प्रकार का भेद समाप्त कर दिया जाए और सबके लिए बराबर कानून हो जाए। तो संभव है कि यह बीमारी दूर हो सकती है।

पिछले दिनों एक महिला खिलाड़ी ने यह बयान दिया कि जो महिलाएं आंदोलन कर रही

हैं वह गलत है, अनुशासनहीनता है। इसके उत्तर में आंदोलन करने वाली कुछ महिलाओं ने कही, कि एक महिला को इस प्रकार की बात नहीं करनी चाहिए और सभी महिलाओं को हमारा आंदोलन का समर्थन करना चाहिए। मैं यह महसूस करता हूँ कि यह बात बहुत निंदनीय है कि महिलाओं को इस आंदोलन का समर्थन करना चाहिए। महिला और पुरुष के बीच में इस प्रकार का विभाजन यदि किया जा रहा है यह बहुत घातक है। जिस महिला ने इस प्रकार की टिप्पणी की है कि सभी महिलाओं को इस आंदोलन का समर्थन करना चाहिए उसके इस प्रकार के कथन की सार्वजनिक निंदा होनी चाहिए, महिलाओं के द्वारा भी और पुरुषों के द्वारा भी। मैं समझता हूँ कि समाज को महिला और पुरुष के बीच में बांटने वाली महिलाएं बहुत ही गंदा कार्य कर रही हैं।

8–पर्यावरण संरक्षण के नाम पर आर्थिक प्रगति को रोकना ठीक नहीं –

किसी देश को कमजोर करने के लिए सिर्फ सेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उस देश की अर्थव्यवस्था को अगर कमजोर कर दिया जाए तो सब कुछ अपने आप हो जाता है। पाकिस्तान की मूर्खता ने पाकिस्तान को भिखारी बना दिया। बंगाल में भी ममता दीदी ने सिंगुर के कारखाने को इस तरह रोका कि आज तक फिर उस तरह का उद्योग नहीं लग सका। अभी भी भारत का विपक्ष लगातार उसी राह पर चल रहा है जिससे भारत में कोई बड़ा उद्योग न लग सके।

वारसू महाराष्ट्र का एक क्षेत्र है जहां उद्धव ठाकरे ने कारखाना लगाने की अनुमति दी थी। जिस तरह पूरे भारत में होता है ठीक उसी तरह वारसू के लोगों ने विरोध किया लेकिन कारखाने की कार्यवाही जारी रही। अब महाराष्ट्र में सरकार बदल गई है। अब उद्धव ठाकरे और शरद पवार की भाषा भी बदल गई है। अब महाराष्ट्र के विपक्षी दल यह मांग कर रहे हैं कि जनता जब तक कारखाना लगाने के लिए सहमत न हो तब तक कारखाना न लगाया जाए। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जनता कभी भी सहमत होगी ही नहीं क्योंकि जनता तो राजनेताओं से प्रभावित होती है और राजनेता पूरी मुर्गी ही खा जाना चाहते हैं अंडे खाने तक सीमित नहीं है। वर्तमान स्थिति इतनी खराब हो गई है कि पूरे देश में कहीं भी किसी तरह का कारखाना लगभग असंभव हो गया है। यहां तक कि कोयला खदानें भी चलने नहीं दी जा रही है। कोयला भले ही विदेश से मंगाया जाए लेकिन भारत के कोयला खदान को किसी भी हालत में चलने नहीं दिया जाएगा। यह बात सरगुजा जिले में अपनी आंखों से देख रहा हूँ। मेरे विचार से मोदी सरकार को इस प्रकार के कानून हटा देने चाहिए जो पर्यावरण के नाम पर नए उद्योग लगाने में बाधक हो।

9–अरविंद केजरीवाल सामान्य नहीं बल्कि चतुर राजनेता –

पाकिस्तान में एक बड़े खालिस्तानी आतंकवादी की अज्ञात लोगों ने हत्या कर दी। वह कई मामलों में आतंकवादी गतिविधियों में शामिल रहा। उसकी हत्या किन लोगों ने की यह बात अभी तक साफ नहीं हुई है। लेकिन जब से पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी है तब से

खालिस्तानी उग्रवाद पर अधिक अच्छा नियंत्रण दिख रहा है। पाकिस्तान में किसी सिख नेता की हत्या हो जाए और पंजाब में उसकी कोई प्रतिक्रिया न हो यह बहुत स्वागत योग्य है। इसी तरह अमृतपाल की भी गिरफ्तारी हुई और उस गिरफ्तारी का पंजाब के सिखों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इससे यह स्पष्ट होता है कि अरविंद केजरीवाल ने सिर्फ आतंकवादी सिखों का समर्थन लेने तक ही अपने को सीमित रखा था। वास्तव में वे खालिस्तान समर्थक नहीं थे। सिमरजीत सिंह मान के चुनाव में भी अरविंद केजरीवाल ने अपना अलग से उम्मीदवार खड़ा करके यह साफ कर दिया था कि अरविंद केजरीवाल कोई सामान्य राजनेता नहीं बल्कि एक बहुत ही चतुर खिलाड़ी है। इन्होंने सत्ता और सुख को अपना लक्ष्य बनाया है। चाहे उसको प्राप्त करने के लिए किसी के साथ भी समझौता करना पड़े और किसी को भी धोखा देना पड़े। स्पष्ट है कि अरविंद केजरीवाल ने इस नीति के अंतर्गत अन्ना को अपने साथ जोड़ा था। इसी नीति के अंतर्गत सिख उग्रवाद को भी अपने साथ जोड़ा था और इसी नीति के अंतर्गत एक ईमानदार राजनेता की छवि भी बनाई थी। मेरे विचार से उग्रवादी सिखो को धोखा देकर अरविंद केजरीवाल ने सिद्ध कर दिया है कि वह राहुल गांधी के समान अनाड़ी राजनेता नहीं बल्कि इंदिरा गांधी के समान चतुर खिलाड़ी है।

10–राजनैतिक नाटकबाजी का हो रहा सफाया–

नरेंद्र मोदी के पहले जो राजनैतिक व्यवस्था थी, उसमें समाज को बहुत धोखा दिया गया –

- सांप्रदायिकता को धर्मनिरपेक्षता कहा गया।
- अपराधियों को जब तक न्यायालय दंडित न करें तब तक निरपराध कहा गया।
- भ्रष्टाचार को गांधी, टोपी और खादी पहनकर ईमानदार कहा गया।
- यहां तक कि जातिवाद को बढ़ाया गया और प्रत्यक्षतः जातिवाद के विरुद्ध भाषण दिए गए।
- यहां तक कि शराब रोकने का नाटक किया गया और शराब को बढ़ाया गया।

अब नरेंद्र मोदी के आने के बाद न भ्रष्टाचार रुका है न अपराध रुका है न संप्रदायिकता और न ही जातिवाद रूका है। लेकिन एक बदलाव साफ दिख रहा है कि मोदी के पहले जो लोग सत्ता में थे उनका झूठ समाज के सामने आ रहा है। अब संप्रदायिकता के समर्थन में कांग्रेस पार्टी पूरी तरह निर्लज्ज होकर खड़ी है। मोदी के पूर्व तक कभी यह सोचा ही नहीं गया कि कांग्रेस पार्टी मुस्लिम सांप्रदायिकता की समर्थक है क्योंकि उस समय तक सभी राजनैतिक दल जिसमें भाजपा भी शामिल है वे सभी अल्पसंख्यक तुष्टीकरण को ही धर्मनिरपेक्षता समझते थे। सभी राजनैतिक दल भ्रष्टाचार को मजबूरी समझते थे और भ्रष्टाचार करते हुए भी अपने को ईमानदार दिखाते थे। सभी राजनैतिक दल जातिवाद का सहारा लेते थे और जातिवाद का विरोध भी करते थे।

अब इन सब स्थितियों में बदलाव दिख रहा है। प्रारंभिक काल में मोदी जी ने धर्मनिरपेक्षता का सहारा लिया, भ्रष्टाचार का भी विरोध किया तथा जातिवाद या अपराधीकरण के भी विरुद्ध खुलकर खड़े रहे। लेकिन अब 5–6 वर्षों के बाद मोदी जी को यह आभास हो गया कि

यह बीमारी बहुत गंभीर है। इसलिए नरेंद्र मोदी ने कुछ समझौते भी किए। अब यदि कोई भाजपा का भ्रष्टाचार करे तो मोदी जी चुप रहते हैं लेकिन विपक्षी अगर भ्रष्टाचार करे तो उसका जेल जाना निश्चित है। इसमें कम से कम एक बात जरूर छुपी है कि जो राजनेता गांधी के नाम का नाटक करके अपने को ईमानदार कहते थे और खुला भ्रष्टाचार करते थे वे सभी अब बहुत बेशर्म होकर कह रहे हैं कि हम सिर्फ अकेले ही भ्रष्ट नहीं है। अब सभी नेताओं को खुलकर जातिवाद का समर्थन करने के लिए प्रत्यक्ष होना मजबूरी बन गया है।

मैं समझता हूँ कि इतना होना ही पर्याप्त नहीं है लेकिन इससे अधिक अभी करना मोदी जी के लिए भी खतरे से खाली नहीं है। मैं पूरी तरह नरेंद्र मोदी की मजबूरी समझता हूँ और अगले चुनाव के बाद जब राज्यसभा और लोकसभा में पूर्ण बहुमत मोदी जी का हो जाएगा तब इन समस्याओं का समाधान की उम्मीद करता हूँ। सभी विपक्षी दलों का मुखौटा उतर गया इतनी ही सफलता सरकार की है। अच्छा हो कि हम सब एकजुट होकर नरेंद्र मोदी को और शक्तिशाली बनावें जिससे उनकी यह मजबूरी समाप्त हो सके।

11– नेहरू जी की सांप्रदायिक राजनीति के चलते हिंदुओं के साथ हुआ षड्यंत्र–

भारतीय राजनीति में भीमराव अंबेडकर सबसे अधिक स्वार्थी राजनेता हैं और पंडित नेहरू सबसे अधिक स्वार्थी प्रधानमंत्री। पंडित नेहरू ने धमकी देकर प्रधानमंत्री पद प्राप्त किया, यद्यपि पटेल का बहुमत था। पंडित नेहरू ने हमेशा गांधी की नीतियों का विरोध किया। गांधी हत्या के बाद पंडित नेहरू पूरी तरह सांप्रदायिक खेल खेलने लगे। जितना सांप्रदायिक पंडित नेहरू थे उतने सांप्रदायिक मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा को नहीं कहा जा सकता क्योंकि मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा प्रत्यक्ष सांप्रदायिक थे और पंडित नेहरू धर्मनिरपेक्षता का लबादा ओढ़कर मुस्लिम सांप्रदायिकता के पक्ष में हमेशा सक्रिय रहे। सरदार पटेल धर्म निरपेक्ष थे और नेहरू सांप्रदायिक। शेख अब्दुल्ला के साथ अपना भाईचारा निभाने के लिए पंडित नेहरू ने कश्मीर समस्या को उलझाया। उस समय हरि सिंह का परिवार सबसे सफल मुख्यमंत्री हो सकते थे लेकिन नेहरू की जिद के कारण शेख अब्दुल्लाह मुख्यमंत्री बने। नेहरू की जिद के कारण कश्मीर समस्या नासूर बन गई जिसे अब बड़ी मुश्किल से निपटाया गया।

नेहरू ने राजेंद्र बाबू के राष्ट्रपति बनने में भी बहुत रोड़े अटकाएं लेकिन वे सफल नहीं हो सके। पटेल के मरते ही नेहरू ने न्यायपालिका की स्वतंत्रता भी छीन ली जो बड़ी मुश्किल से सन 1973 में न्यायपालिका वापस प्राप्त कर सकी। नेहरू जी ने सांप्रदायिक राजनीति के चलते हिंदुओं के साथ षड्यंत्र किया। यह भी हो सकता है कि नेहरू जी ने वोटों की लालच में मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति बनाई हो और यह भी हो सकता है कि उनके अंदर जन्म से ही मुस्लिम प्रेम हो। चाहे कुछ भी हो लेकिन नेहरू जी ने मुस्लिम सांप्रदायिकता को प्रश्रय दे कर अच्छा नहीं किया। जब भी वर्तमान कांग्रेस से यह प्रश्न पूछा जाता है कि आपने मुस्लिम पुरुषों को चार विवाह की छूट दी और हिंदुओं को एक से अधिक पर रोक दिया यह कौन सी धर्मनिरपेक्षता थी तो आज नेहरू से लेकर

राहुल तक के पास इस प्रश्न का उत्तर नहीं है। नेहरू जी ने सरकारी खर्च पर मुसलमानों को अपना धार्मिक स्कूल चलाने की छूट दी और हिंदुओं को नहीं दी। धर्मनिरपेक्षता का ढोंग करके मुस्लिम सांप्रदायिकता को लगातार आगे बढ़ाने के लिए पंडित नेहरू की सांप्रदायिकता को देश हमेशा याद रखेगा।

12– हिंदुओं को एकजुट करने में जातिवाद बाधक –

नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी लगातार मुसलमानों के समक्ष हिंदुओं को एकजुट करने का प्रयास कर रहे हैं। कश्मीर फाइल्स अथवा द केरल स्टोरी की कहानी उसी दिशा में एक प्रयत्न है। इस प्रयत्न का प्रभाव भी दिख रहा है। हिंदू पूरे देश में एकजुट हो रहा है और मजबूत भी हो रहा है। विपक्ष भी इस मामले में बहुत सावधान हैं। अब तक तो विपक्ष मुस्लिम एकजुटता तक सीमित था लेकिन अब नीतीश कुमार के आने के बाद विपक्ष ने अपनी रणनीति बदल दी है। अब विपक्ष यह चाहता है कि जातिवाद को अधिक मजबूत किया जाए। जातीय जनगणना भी उस प्रयत्न में सहायक है। यदि जातिवाद को प्रश्रय दिया गया तो हिंदू एकजुट कभी होगा ही नहीं। नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी की सारी योजना नीतीश कुमार की इस प्लानिंग से फेल हो सकती है क्योंकि मुसलमान तो एकजुट रहेगा ही और हिंदू जातीय टकराव में बंट जाएगा।

इसी तरह सरकारी कर्मचारियों को भी पुरानी पेंशन योजना के नाम से एकजुट किया जा रहा है। यह पुरानी पेंशन योजना हिंदू एकत्रीकरण में बहुत बाधक होगी। विपक्ष अच्छी तरह समझ रहा है कि महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार कुछ भी काम आने वाले मामले नहीं है। यदि कोई शस्त्र हिंदू एकत्रीकरण के खिलाफ सफल हो सकता है तो वह है जातिवाद और सरकारी कर्मचारियों में बंटवारा। मैं समझता हूँ कि भारत के हिंदुओं को इस मामले में सावधान हो जाना चाहिए। सारा विपक्ष एकजुट होकर जातिवाद को बढ़ाने में सक्रिय है।

13–पशु क्रूरता अधिनियम पर फिर से विचार करना चाहिए–

पूर्व मंत्री विजय गोयल ने दिल्ली में एक बैठक आयोजित की और उसमें इस विषय पर विचार हुआ कि देश भर ने बढ़ती हुई कुत्तों की संख्या और ऐसे आवारा कुत्तों के काटने से होने वाली मानवीय क्षति पर आगे क्या करना चाहिए। आमतौर पर वक्ताओं ने पशुओं के संबंध में बनाए गए अनेक कानूनों की दुबारा समीक्षा की आवश्यकता बतायी। मैं तो बहुत लंबे समय से इस मत का रहा हूँ कि पशु अत्याचार अधिनियम स्वंय में एक समस्या है समाधान नहीं। पशु भी जीव तो है लेकिन उन्हें मौलिक अधिकार प्राप्त नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि पशुओं को सिर्फ संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। हम आवश्यकतानुसार पशुओं को मार भी सकते हैं और उनकी सुरक्षा भी कर सकते हैं। जीव दया कानून सिर्फ मनुष्य के लिए हो सकते है पशु या जीव–जंतुओं के लिए नहीं। यदि कोई व्यक्ति ऐसे दया करता है तो यह उसकी स्वतंत्रता है लेकिन इसके लिए किसी

दूसरे को किसी कानून के अंदर बाध्य नहीं किया जा सकता।

इस कानून का तो इस तरह मजाक बनाया गया कि चूहा मारने पर भी भारत के एक जनपद बाराबंकी में पुलिस ने अपराध कायम कर दिया। डॉक्टरों ने चूहे का पोस्टमार्टम किया और न्यायालय में मुकदमा चल रहा है। इससे अधिक इस कानून की क्या दुर्गति हो सकती है? ऐसा कानून यदि गाय तक सीमित है तो उस पर विचार किया जा सकता है लेकिन ऐसा कानून बकरे, कुत्ते, चूहे या मच्छरों के लिए बना दिये जाए तो कानून बनाने वालों की मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता है। मैं विजय गोयल जी को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने इस गंभीर समस्या पर विचार मंथन शुरू किया। जिन पशु प्रेमियों ने इस विचार मंथन में तोड़फोड़ करने की कोशिश की उन पशु प्रेमियों की निंदा करना भी आवश्यक है। शांतिपूर्ण विचार मंथन में इस प्रकार की तोड़फोड़ सिर्फ गुंडागर्दी ही मानी जा सकती है और कुछ नहीं है। मैं आप सब से निवेदन करता हूँ कि पशु अत्याचार निवारण कानून को समाप्त कराने की आवश्यकता पर सोचे।

मैं जन्म से अग्रवाल हूँ। कर्म से बचपन में ही ब्राह्मण घोषित हो गया था और वर्तमान में मुनि हूँ अर्थात वानप्रस्थी हूँ जो अप्रत्यक्ष रूप से सन्यास है। फिर भी मैंने यह बात लिखी क्योंकि मैं एक विचारक हूँ। मैंने बचपन से ही मानता कि पशु क्रूरता अधिनियम पूरी तरह गलत है। मैं बचपन में जब नगरपालिका का अध्यक्ष बना तब मैं आवारा सूअरों को मरवा दिया था और आवारा घूमती हुई गायों को भी कांजी हाउस में बंद करा देता था। सन 2000 में जब मैं नगरपालिका का अध्यक्ष बना तब मैंने बड़ी संख्या मैं आवारा कुत्तों को मरवा दिया था। जब मैं भारत दर्शन के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश गया तब वहां के लोगों ने मेरे सामने आवारा बंदरों की समस्या बतायी। मैंने उन्हें सलाह दी कि आप आवारा बंदरों को मार सकते हो क्योंकि ये बंदर हनुमान के नहीं बल्कि बाली के संतान है। जब बिहार सरकार ने यह घोषित किया कि नीलगाय, गाय न होकर जंगली हिरण है और यदि वे नुकसान पहुंचाते हैं तो उन्हें मार दिया जाए। तब भी मैंने नीतीश कुमार का समर्थन किया था। अब भी मैं यह मानता हूँ कि पशुओं के साथ हमें व्यक्तिगत पारिवारिक स्तर पर संवेदनशील व्यवहार करना चाहिए। लेकिन यदि वे नुकसान कर रहे हैं तो वैसी परिस्थिति में दया दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि शहरों की सीमा के अंदर पशुपालन पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए। जो लोग हर जीव का मौलिक अधिकार मानते हैं वो पूरी तरह गलत है। मेरे विचार से पशु क्रूरता अधिनियम पर फिर से विचार होना चाहिए।

नरेन्द्र सिंह जी का जीवन परिचय

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के एक परम्परागत किसान परिवार में हुआ था। पांच भाई. बहनों में मै सबसे छोटा हूँ। हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति भी अमूमन भारतीय किसान परिवारों के जैसी ही थी। मै अब समझता हूँ कि मुझे शुरुआत में इस दशा ने ही लीक से हटकर सोचने की आवश्यकता महसूस करायी। मुझे जब होश आना शुरू हुआ तो यह पाया कि हमारे पास.पडोस में कई ऐसे परिवार थे जिनकी अचल सम्पत्ति या तो हमसे कम थी या वे सम्पत्ति विहीन थे, लेकिन वे

तथा खर्च के बीच सन्तुलन न हो तो उसके जीवन का आर्थिक पक्ष सुदृढ नहीं बन सकता है और भारत में ऐसा होने का कारण कृषि उत्पादों की कीमत मुद्रा अवमूल्यन की तुलना में सन्तुलित अवस्था में न बढ़ना तथा जीवन निर्वाह के प्रबन्ध का दोष होता है। वैसे इस समस्या के विकास के लिए मै इन दोनों कारणों में से 'गलत प्रबन्ध' को अधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ।

वस्तुतः इस निष्कर्ष तक पहुँचने से पहले ही अपनी पढ़ाई करते हुए मुझे भारतीय सेना में नौकरी मिल गई। सेना में नौकरी करते हुए थोड़े ही समय में मै यह समझ गया था कि यह नौकरी करके संतोषप्रद जीवन नहीं जी सकूंगा। क्योंकि मै जहाँ जाता था वहाँ के व्यवस्था प्रबन्धन के गुण.दोष का निरीक्षण करने लग जाता था। सेना में भी मेरे साथ ऐसा ही हुआ, तब देश और समाज की दशा को लेकर मेरे जहन में बहुत से प्रश्न उभर रहे थे लेकिन मेरे पास किसी प्रश्न का कोई उत्तर नही था! ऐसे प्रश्नो का उत्तर खोजने की मेरे अन्दर बहुत तीव्र उत्कंठा थी और मैने तब एक अनिश्चित मानसिक दशा में अपने परिवार की आर्थिक कमजोरी के हल को महत्व नही दिया और कुछ समय बाद वह नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने पर मै अपनी मां के प्रति बहुत द्रवित हुआ लेकिन अपनी वैचारिक शक्ति के आधार पर मै हमेशा वह द्रवित भाव छुपाता रहा। घर वापिस आने पर मेरा अधिकांश समय अपने खेतों में व्यतीत होने लगा। इसका एक कारण यह भी था कि गांव में अनेक लोग मेरे नौकरी छोड़ने को बहुत घृणित कार्य मान रहे थे और मैं उस समय उन्हें कोई सटीक जवाब नहीं दे पा रहा था। मैंने उस दौर में अपने अतिसीमित साधनों तथा एक दो मित्रों के सहयोग से अपना सामाजिक अध्ययन जारी रखा और अपने तब तक के अनुभवों के आधार पर रिश्ते नाम का एक उपन्यास लिखा। लेकिन मैं उसका कोई उपयोग न कर सका। इस उपन्यास का कथानक धर्म, राष्ट्रवाद, जातिवाद, बेरोजगारी और मानवता पर आधारित था। क्योंकि तब तक मेरा ऐसा ही सोचना था कि भारत की जनता को अत्यन्त राष्ट्रवादी होना चाहिए और भारत में मजबूत सरकार बनी रहनी चाहिए जो इसके हित साध सके।

मेरे चरित्र में दो बुनियादी दोष रहे हैं, एक तो मै कभी–कभी अत्यन्त क्रोधित हो जाता हूँ और दूसरा मैं किसी की कोई बात नही मानता हूँ और मानता भी हूँ तो बहुत छान–बीन करके। जिस कारण से मेरे व्यवहार को कई लोग नापसंद भी करते रहे। मेरे इन चारित्रिक दोषों के कारण कई बार मेरे ठीक निर्णयों पर भी प्रश्न उठते रहे हैं। दूसरी ओर आर्थिक कमजोरी होने पर भी मेरा अधिकांश समय किसी आर्थिक गतिविधि में नहीं लगता था बल्कि मैं अपने अध्ययन में ही लगा रहता था। मै अब उसके बारे में सोचता हूँ तो अपने उस प्रयास को समय के विरुद्ध अपना दुस्साहस ही मानता हूँ। क्योंकि ऐसा करने के लिए मैने अपना भविष्य दांव पर लगा दिया था। मै अपना सामाजिक अध्ययन दो भागो में बांटता हूँ, पहला आदरणीय बजरंग मुनि से सम्पर्क के पूर्व का, वैसे तो मैने तब भी समाज की न्यायिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दशाओं का ही अध्ययन किया था लेकिन उसमें तर्क तथा यथार्थपरता का अभाव था। दूसरा आदरणीय बजरंग मुनि से सम्पर्क होने के बाद का, इसमें मैने विषयों को तर्क तथा यथार्थ की कसौटी पर अधिकतम

कसने का प्रयास किया है।

इसी सिलसिले में मैंने एक बार मुनि जी से यह प्रश्न किया कि यदि भारत में कोई मजबूत सरकार हो तो देश की समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है?.....मुनि जी द्वारा दिया गया उस प्रश्न का उत्तर मुझे याद है कि कोई सरकार किससे मजबूत होनी चाहिए? क्या समाज से और यदि कोई सरकार समाज से मजबूत होगी तो फिर किसी विदेशी सरकार तथा किसी देसी व्यवस्था तन्त्र में क्या अन्तर रह जाएगा? क्योंकि जनता को तो दोनो की ही गुलामी करनी होगी। इस एक उत्तर ने समाज, इसकी व्यवस्था तथा सरकार के विषय में मेरे सोचने में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया। उस दौर में मैंने जीविका चलाने के लिए उत्तर प्रदेश परिवहन निगम में भी नौकरी की और अपना व्यवसाय करने का भी प्रयास किया। लेकिन मैं कभी इस बात से संतुष्ट नहीं हो पाया कि यदि मैं अपनी पूरी बौद्धिक तथा शारीरिक क्षमता अपने रोजगार को सुचारू बनाने में लगा दूं और अपनी उम्र ढलने तक कुछ पूंजी इक्ट्ठी कर भी लूं तो मेरे जीवन में उसका प्रयोग क्या होगा? क्योंकि पूँजी, बुद्धि तथा श्रम के नियोजन से प्राप्त हो सकेगी और जब मेरी बुद्धि तथा श्रम पूँजी निर्माण में लग जाएगें तो मै समाज.विज्ञान का अनुसंधान कब कर सकूंगा? और जब तक यह प्राप्त होगी सम्भवतः तब तक दुनिया से कूच करने का समय भी आ चुका होगा। लेकिन समाज की गति देखता हूँ तो पूँजी विहीन रहकर जीवन बशर करना भी आसान काम नहीं है। यह बात ठीक है कि जीवन में अनेक असफलताएं नई खोज और अधिक परिश्रम करने की उत्कंठा भी पैदा करती हैं लेकिन संतोष इसलिए करना पड़ता है की चाहे हम किसी भी आला मुकाम तक पहुँच जाएं लेकिन प्रकृति के जीवन चक्र से बाहर तो नहीं है।

यह सच है कि हम सभी के जीवन में अनेक घटनाएं होती रहती हैं। वस्तुतः घटनाएं ही जीवन का अर्थ सिद्ध करती हैं लेकिन इनमें से कुछ घटनाएं ऐसी भी होती हैं जो जीवन को बहुत देर तक या हमेशा के लिए ही प्रभावित कर देती हैं। मेरे जीवन मैं भी ऐसी कुछ घटनाएं हुई हैं। इनमें पहले मेरे पिताजी तथा बाद में बड़े भाई की असमय मृत्यु ने मेरे जीवन पर बहुत दुष्प्रभाव डाला। मैंने शुरू से ही अपनी सोच समझ का आंकलन कर लिया था इसलिए मैं विवाह जैसे बंधन से दूर रहा। लेकिन मैंने अपनी मां से किए हुए एक वादे के मुताबिक अपने परिवार का यथासंभव सहयोग करना कभी नहीं छोड़ा। दूसरे सच यह भी था कि अपने परिश्रम से जो कुछ पूँजी प्राप्त कर सका उसका मेरे आवश्यक खर्चो के अतिरिक्त दूसरा कोई उपयोग ही नहीं था।

मुनि जी के सानिंध्य में मैंने समाज विज्ञान का अध्ययन करते हुए शक्ति केन्द्रीयकरण के सिद्धान्त के गुण. दोष, व्यक्ति का मूल अधिकार क्या है और व्यवस्था निर्माण में इसकी क्या भूमिका हो सकती है? राज्य निर्माण के विषय में सम्प्रभुता राज्य का दोष होती है, धर्म, न्याय, अर्थ तथा समाज व्यवस्था के अन्य अनेक विषयों का अध्ययन किया, इन्हें अपने बौद्धिक स्तर के अनुसार समझा और इस आधार पर मै ईश्वरवाद सहित अन्य स्थापित व्यवस्थाओं के विरुद्ध यह सिद्धान्त प्रतिपादित करने का दुस्साहस कर पाया कि ''कोई भी व्यवस्था चिरस्थाई नहीं होती है बल्कि देश काल परिस्थिति के अनुसार इसके स्वरूप में बदलाव का होना आवश्यक होता है।'' इस दौरान मैंने एक 'जीवन.पथ' नामक उपन्यास, 'मौलिक व्यवस्था का विचार' नामक एक शोध पत्र जोकि समाज

एक 'जीवन.पथ' नामक उपन्यास, 'मौलिक व्यवस्था का विचार' नामक एक शोध पत्र जोकि समाज व्यवस्था के मौलिक स्वरूप को निर्मित करने का मार्ग प्रशस्त करता है और एक कविता संग्रह 'दृष्टि' लिखा है। समाज विज्ञान के अध्ययन कि मैं अपनी यात्रा को अनवरत रखना चाहता हूँ। क्योंकि मुझे ऐसा करते रहने में स्वाभाविक आनन्द की अनुभूति होती है।

नरेन्द्र सिंह (9012432074)

मुनि जी की टिप्पणी

नरेन्द्र सिंह जी से मेरा परिचय करीब 12 वर्ष पूर्व हुआ तब से लेकर अब तक लगातार वो हम लोगों से जुड़े हुए है। वैचारिक धरातल पर मैंने यह अनुभव किया है की हम लोगो के साथ जितने भी लोग जुड़े हुए है उन सब से अधिक गंभीर चिंतन मंथन करने वालो में नरेन्द्र जी को मैंने पाया है। इनकी साहित्यिक शैली भी अच्छी है और विशेष कर के निष्कर्ष निकलने में इनका काफी योगदान है और बिना ठीक से विचार किये, ऐसा नहीं है की ये आंख बंद कर मेरी बात मान लिया करते थे जैसा आम तौर लोग करते है, लेकिन नरेन्द्र जी बिना विचारे मेरी बात भी नहीं मानते थे, और अगर कहीं गलत भी लगता था तो अपनी उचित सलाह भी देते थे।किसी किसी विषय पर ये महीनो सोचते थे और फिर हमसे विचार विमर्श करते थे की अपने उस विषय पर जो कहा उसे फिर से समझाइए, अर्थनीति पर इन्होने बहुत गम्भीरता से चिंतन किया और समझा तब स्वीकार किया अन्यथा स्वीकार नहीं किया। नरेन्द्र जी का हम लोगो के साथ जुड़ना मेरे विचार से बहुत ही अच्छा रहा और भविष्य में वैचारिक धरातल पर नरेन्द्र जी हम लोगों का अच्छा मार्गदर्शन और सहयोग भी करते रहेंगे।

कार्यक्रम की सूचना

ज्ञानयज्ञ परिवार की समीक्षा एवं योजना बैठक

ज्ञानयज्ञ परिवार रामानुजगंज की एक बैठक दिनांक 18 मई 2023 को आमंत्रण धर्मशाला के हाल में आयोजित की गई। यज्ञोपरांत बैठक में आदरणीय बजरंग मुनि जी की उपस्थिति में क्रमशः 1– तातापानी महायज्ञ की समीक्षा 2– आगामी महायज्ञ पर चर्चा 3– रामानुजगंज नगर के लोक स्वराज आधारित व्यवस्था एवं 4– ज्ञानयज्ञ परिवार को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विचार विमर्श हुआ।

तातापानी महायज्ञ की सफलता के उद्देश्य से प्रस्तावित सदस्यता अभियान जिसमें लगभग 7000 से अधिक सदस्य बने थे, उन सदस्यों से संवाद एवं सहयोग की एक सुदृढ़ व्यवस्था बनाने के अन्य विकल्पों पर चर्चा हुई। यज्ञ में लोगों की उपस्थिति और कार्यक्रम की व्यवस्था पर लगभग सभी लोगों ने संतोष व्यक्त किया। आगामी त्रिकुंडा महायज्ञ पर दिनांक 22 मई 2023 को

लगभग सभी लोगों ने संतोष व्यक्त किया। आगामी त्रिकुंडा महायज्ञ पर दिनांक 22 मई 2023 को आयोजित बैठक की सूचना देते हुए प्रमोद केशरी जी ने बताया की तातापानी महायज्ञ की ही भांति 43 गांवों की नवाडीह अथवा त्रिकुंडा महायज्ञ आयोजन समिति का गठन किया जाएगा। वह समिति चर्चा करके स्थान एवं तिथियों का निर्णय भी उक्त बैठक में ही करेगी।

आदरणीय बजरंग मुनि जी ने रामानुजगंज नगर को अपराधमुक्त रखने के अपने संकल्प को रामानुजगंजवासियों के सामने दोहराते हुए, उन्होंने मोहन गुप्ता जी को अपनी इस दुर्लभ एवं अमूल्य विरासत का प्रतिनिधि बताते हुए लोगों से उनके सहयोग का आग्रह किया। अजय गुप्ता, अजय केशरी, बजरंग गुप्ता, राजेश प्रजापति आदि नगरवासियों ने मुनि जी के संकल्प एवं उनके विरासत को सहेजने की आवश्यकता पर बल दिया।

आदरणीय मुनि जी ने ज्ञानयज्ञ परिवार के वर्तमान स्वरूप खर्च इत्यादि बताया कि अभी तक ज्ञानयज्ञ परिवार का पूरा खर्च अपने मित्रों के माध्यम से पूरा करते आए हैं। उन्होंने इस अभियान को राष्ट्रव्यापी बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि देश की अधिकतम जनसंख्या शरीफ लोगों की है। जो अपने परिवार को अच्छे संस्कार देने उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में लगा रहता है। वह ना तो भ्रष्टाचार में लिप्त होता है ना अपराध में। ऐसे आम जनमानस को मुट्ठी भर धूर्त लोग विभिन्न प्रकार के प्रपंच रच कर लूटते रहते हैं। शरीफ लोगों के बीच सत्य असत्य को स्वार्थ रहित हो रखकर इनमें विचार मंथन की प्रक्रिया के द्वारा समझदार बनाए बिना लूट के व्यापार को बंद नहीं किया जा सकता। लोगों को गुलाम बनाये रखने के लिए उन्हें अमीर गरीब, हिन्दू मुस्लिम, सवर्ण दलित, स्त्री पुरुष आदि के आधार पर बांट कर उनमें वर्ग संघर्ष बढ़ाने का काम कानून सम्मत तरीके से किया जा रहा है। समाज विज्ञान पर शोध और समझदारी का विस्तार ज्ञानयज्ञ परिवार का प्रमुख उत्तरदाई कार्य है। उन्होने इस योजना को आत्मनिर्भर बनाने की अपील की।

सितम्बर के अन्तिम सप्ताह में आयोजित नवाडीह महायज्ञ के आयोजन का उद्देश्य समाज में शराफ़त और विचार मंथन के महत्व की स्थापना है– बजरंग मुनि

आज दिनांक 22 मई 2023 को रामानुजगंज रामचंद्रपुर ब्लॉक के ग्राम नवाडीह में संरक्षक रामचन्द्र गुप्ता जी के घर के पास 'सामूहिक महायज्ञ' आयोजन के निमित्त एक बैठक आहूत की गई। नवाडीह और त्रिकुंडा के आसपास के 43 गांवों के प्रतिनिधियों को लेकर बनी समिति ने इस महायज्ञ के सफलतापूर्वक आयोजन की जिम्मेदारी उठाई है।

सुप्रसिद्ध मौलिक विचारक एवं समाजविज्ञानी बजरंग मुनि जी ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि भावना और बुद्धि के समन्वय से ही लोगों में समझदारी बढ़ाई जा सकती है। सामान्यता समाज में दो तरह के लोग पाए जाते हैं एक भावना प्रधान और दूसरे बुद्धि प्रधान। भावना प्रधान लोग संस्कारों की बात करेंगे, धर्म का आचरण करेंगे, किसी को ठगेंगे नहीं, झूठ बोलना और चोरी

जैसे कार्यों को पाप मानते हैं और जहां तक हो सके कानून का पालन करते हैं। वहीं दूसरी तरफ बुद्धि प्रधान लोग शक्ति और संपत्ति इकट्ठा करने के लिए किसी का भी अहित करने में नहीं चूकते और कानूनों को तोड़ मरोड़ कर अपने फायदे के लिए प्रयोग करते हैं। आज समाज में जितने भी प्रकार की समस्याएं दिख रही है उन सभी समस्याओं को पैदा करने वाले यही लोग हैं। बुद्धिजीवी लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए तमाम तरह के प्रपंच फैलाकर वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देते हैं। भावना प्रधान लोग उनके जाल में फंस अपना सब बर्बाद कर लेते हैं।

मुनि जी के अनुसार वर्तमान विश्व के सामने दो बड़ी समस्याएं खड़ी है 1– व्यक्ति के अंदर बढ़ाती स्वार्थ और हिंसा 2– सत्ता का केंद्रीयकरण। व्यक्ति के अंदर बढ़ते स्वार्थ और आक्रोश के समाधान के लिए जरूरी है कि सभी वर्गों के लोग एक साथ बैठकर किसी एक विषय पर व्यापक विचार मंथन करें। 'मानव मानव एक समान' का आदर्श ध्यान में रखते हुए आदिवासी–गैरआदिवासी, अमीर–गरीब, हिन्दू–मुसलमान स्त्री–पुरुष आदि के साथ भेदभाव रहित हो, मिलकर समाज को ठीक दिशा में ले जाने के सत्संकल्प के साथ एक स्थान पर बैठकर चर्चा करने से ही सभी समस्याओं का समाधान होगा। बड़े बड़े एयरकंडीशन्ड बंगलों में रहने वाले और गाड़ियों में घूमने वाले, तथाकथित सत्ता को अपनी उंगलियों पर नचाने का भ्रम पालने वाले अभिजात्य लोगों के बस का समाज को 'व्यवस्था परिवर्तन' के लिए तैयार करना है ही नहीं... इतिहास बताता है कि रावण और कंस जैसे परमशक्तिशाली को निरंकुश सत्ता के समूल नाश का साधन वनवासी, वानर, भालू और ग्वाले जैसे आम लोग ही बने थे। आम जन का व्यवस्था परिवर्तन के संघर्ष में शामिल होना ही विजय सुनिश्चित कर सकता है।

परंपरागत यज्ञों में समाज के सभी लोगों की अपार श्रद्धा है। सार्वजनिक सामूहिक यज्ञ आयोजन लोगों को जोड़ने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम हो सकता है। लोगों के बीच भेदभाव स्वार्थ और हिंसा की भावना को खत्म कर, ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां लोग परस्पर प्रीति पूर्वक व्यवहार करते हुए समझदारी से अपना जीवन यापन करें। यही इस महायज्ञ को आयोजित करने के पीछे की सोच है।

समिति के अध्यक्ष श्री विनोद गुप्ता जी ने मुनि जी को पुष्पगुच्छ अर्पित कर आश्वासन देते हुए महायज्ञ के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए लोगों से आगे बढ़कर सहयोग करने की अपील की।

सभा को ज्ञानयज्ञ परिवार रामानुजगंज के प्रमुख मोहन गुप्ता ने कहा कि जहां चंदा समाज में एक बुराई की तरह है। वहीं दान वह माध्यम है जिससे समाज में सत प्रवृत्तियों का विकास कर सबका कल्याण सुनिश्चित किया जा सकता है।

नगर पंचायत उपाध्यक्ष बजरंग गुप्ता ज्ञानयज्ञ परिवार से प्रमोद केशरी, रामराज साहू जी, ज्ञानेंद्र आर्य, एवं आयोजन समिति के संरक्षक राम प्रताप गुप्ता जी, बुद्धिनारायन यादव जी, श्यामबिहारी शुक्ला, रमाकांत शर्मा महामंत्री ललनपाल एवं उपाध्यक्ष सुनील कुशवाहा, ब्रिजेन्द्र यादव सहित क्षेत्र के तमाम गणमान्य जन उपस्थित थे।

क्रमंशः भाग चार

दृश्य–2

(परदा उठता है)

(दृश्य थाने का है। थानेदार बैठा है। उसके सामने कुछ लोग बैठे हैं, एक व्यक्ति घबराये हुए प्रवेश करता है)

शिकायतकर्ता– सलाम हुजूर । मेरे यहाँ डकैती हो गई। डकैत करीब एक लाख का गहना और नगद लेकर भाग रहे हैं। मेरी रिपोर्ट लिखिये और फौरन उन्हें पकड़ने के लिये सिपाही भेजिये तो जल्दी ही पकड़ में आ जायेंगे।

थानेदार– (रोबदार आवाज में) यहाँ हर आदमी फौरन काम करने को कहता है लेकिन हमारी परेशानी कोई नहीं समझता।

शिकायतकर्ता– आपकी क्या परेशानी है हुजूर आप को तो सरकार ने पूरे अधिकार के साथ सिपाहियों की फौज दी है।

थानेदार –(हताश स्वर में) यही तो मुसीबत है। थाने में 22 स्टाफ की जरूरत है। 16 पोस्ट है। इन सोलह में भी चार खाली है, बाकी बचे बारह, जिसमें दो छुट्टी पर है और 6 मंत्री जी के साथ है, तीन जुआ पकड़ने गये हैं–एक थाने के पहरे पर है। मैं खुद प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि कोई आये तो मैं लाला जी के साथ जाकर उनके मकान का झगड़ा निपटाऊँ। उसके बाद आप की डकैती भी पकड़नी है।

शिकायतकर्ता– हुजूर मेरे घर डकैती हुई है। अगर आप देर करेंगे तो डकैत फरार हो जायेंगे। मेरा काम पहले करिये।

थानेदार– भाई मैं लाचार हूँ। लाला जी का काम तो दो घंटे का है। फिर लाला जी आने–जाने की व्यवस्था दे रहे हैं। आपका काम लम्बा है।

(बीच में फोन की घंटी बजती है)

थानेदार– हैलो–में थानेदार बोल रहा हूँ। बताइये क्या बात है। अच्छा एक आदमी ने चार विवंटल राशन का चावल ब्लैक में बेच दिया है, उसे पकड़ना जरूरी है।

(थानेदार के शाँत होते ही फिर घंटी बजती है)

हाँ–हाँ मैं थानेदार ही बोल रहा है। क्या? कोई आदमी गांजा लेकर जा रहा है। उसे पकड़ना सब से ज्यादा जरूरी है। हाँ, मैं पहुँच रहा हूँ। (थानेदार चल देता है।)

शिकायतकर्ता– (निराश होकर बड़बडाता है–) मुझे इसकी शिकायत एस0पी. से करनी चाहिए।

(परदा गिरता है)

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(परदा उठता है)

(कुर्सी पर एस0पी0 बैठे हैं। उनका बाडी गार्ड खड़ा है। शिकायत कर्ता का प्रवेश)

शिकायतकर्ता– हुजूर! मेरे घर डकैती हुई है। मैंने इसकी रिपोर्ट थानेदार साहब से की तो स्टाफ की कमी बताकर टाल गये। अब आप ही कुछ कीजिये।

एस.पी. (रोबदार आवाज में)–हम क्या कर सकते हैं। हमारे विभाग में स्टाफ की कमी है, इसलिए हम अपराध नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं।

हम जानते हैं कि गाँव–गाँव में शराब बन रही है, फिर भी उसे रोक नहीं पा रहे हैं। यह इसलिए हो रहा है क्योंकि स्टॉफ की कमी है। कितने ही दहेज प्रकरणों को जांच रूकी हुई है। ऐसे में आप चाहते हैं कि डकैती के मामले पर जांच हो, यह कैसे मुमकिन है?

शिकायतकर्ता– मगर हुजूर, डकैती तो संगीन अपराध है, इसकी जाँच तो आपको फौरन करनी चाहिए।

एस०पी० (गुस्से में)– हमें क्या करना चाहिये और क्या नहीं इसे आप सिखायेंगे। सरकारी हुक्म है कि गांजा, महिला–उत्पीड़न और दहेज जैसे अपराध पर पहले कार्यवाही करो। फिर हमारा स्टाफ भी ऐसे मामलों में दिलचस्पी लेता है। मैंने ही उसे गांजा पकड़ने का हुक्म फोन पर दिया था। आपकी रिपोर्ट पर जरूर कार्यवाही होगी।

शिकायतकर्ता– हुजुर! हमारी हिफाजत की जिम्मेदारी आप पर है और आप हमारी हिफाजत करने में असफल हैं।

एस०पी०(गुस्से में)– बस–बस–जनाब! बस कीजिये। सरकार तो आप को अपनी सुरक्षा के लिये बन्दूक और पिस्तौल का लाइसेंस दे रही है ताकि सरकार का बोझ कम हो। आप अपनी हिफाजत खुद करें, यही बेहतर होगा। सरकार के पास सिर्फ एक काम तो है नहीं ... ... आप जाइये ... ... कल थानेदार आपको खुद बुला लेगा–

(परदा गिरता है)

दृश्य–4

(परदा उठता है)

(मंच पर बावला साधु का प्रवेश उसके पीछे–पीछे भक्तगण हैं। वे मंच पर बैठ जाते हैं)

घुरउ– गुरुदेव! यह कैसी आजादी है? कैसा लोकतंत्र है जिसमें तंत्र के हाथ में सत्ता है और लोक निहत्था है। कोई फरियाद सुनने वाला नहीं .....

साधु– (शांत स्वर में) क्या बात है बेटा जरा समझाकर बताओ।

कतवारू– गुरू देव! दो दिन पहले एक आदमी के घर डकैती हुई। इसकी शिकायत उसने थानेदार से की। थानेदार ने कहा– हमारे विभाग में स्टाफ की कमी है। हम डकैटी से ज्यादा जरूरी गांजा और राशन चोरी को पकड़ना समझते हैं। जनता को अपनी सुरक्षा खुद करनी चाहिये। हर बात के लिये सरकार जिम्मेदार नहीं है।

साधु– फिर क्या हुआ बेटा। प्रभावित व्यक्ति ने फिर क्या किया।

घुरउ– (चहकते हुए) मैं बता रहा हूँ। गुरू जी। प्रभावित व्यक्ति ने अपने शहर के प्रमुख लोगों की सभा बुलाकर उन्हें अपनी सारी समस्या बताई। उसकी समस्या पर सबने सहानुभूति दिखाई।

साधु– सूखी सहानुभूति? समस्या का कोई हल नहीं?

कतवारू– हाँ गुरु जी। (लोग कुछ कहते तभी एक हरिजन ने थानेदार की तरफदारी करते हुए कहा भाइयो! थानेदार अच्छा आदमी है। जब मुझे मेरी जाति का नाम लेकर एक पंडित ने गाली दी थी. तब थानेदार आया था। जिनके घर में डकैती हुई, उसके घर में ज्यादा सम्पति थी, ज्यादे को डकैत ले गये। हम कमजोर वर्ग के लोग है। सरकार को हमें प्राथमिकता देनी चाहिये।

साधु– बेटा! यहाँ तो समस्याओं का अंबार है। लेकिन हमें उन अपराधों को पहले रोकना चाहिए, जिनका प्रभाव पूरे समाज पर पडता है।

भक्त जून– (उछलकर) कैसे गुरुजी? किन अपराधो को पहले रोकना चाहिए?

साधु– सुनो बेटा–सुनो। धार्मिक भेदभाव, महिला अत्याचार, जातीय अत्याचार, गरीबों को कम मजदूरी देना वगैरह ऐसे काम है जो समाज पर सामूहिक प्रमाव डालते हैं इसलिये उनको रोकना जरूरी है। यही कारण है कि मिलावट, जमाखोरी आदि छोटे अपराधों पर पुलिस ध्यान नहीं दे पाती है।

भक्त जून– थाने में स्टाफ कम क्यों है गुरूजी?

साधु– बेटा! नेता कहते हैं कि सभी शिक्षित हो जाएँ, शराब छोड़ दें, सबका चरित्र सुधर जाएं तो बड़े अपराध खुद ही बन्द हो जायेंगे। यही कारण है कि सरकार पुलिस और न्यायालय पर कम खर्च करके शिक्षा और स्वास्थ्य पर ज्यादा खर्च कर

और न्यायालय पर कम खर्च करके शिक्षा और स्वास्थ्य पर ज्यादा खर्च कर रही है।

आओं भजन सुनो और घर जावो–
भजन

भक्तों सुनो खोलकर कान, भक्तों सुनो खोलकर कान।
सोती है सरकार यहाँ पर चादर लम्बी तान। भक्तों ... ...
पड़े डकैती पुलिस ना पकड़े ऐसा जुग है भाई।
गांजा, राशन पहले पकड़े, जिसमें मिले मलाई ।
यही व्यवस्था है चाहे हो, दिल्ली राजस्थान। भक्तों ... ...
आजादी के बाद बढ़े है केवल भ्रष्टाचारी।
कोटा–परमिट औ राशन से बढ़े रोज व्यापारी।
गुण्डे राज चलाते देखो, संकट में है प्राण। भक्तों ... ...
नेता अपनी बात बताते सब को बढ़ा–चढ़ाकर।
राज चाहते हैं ये करना, सब को आज लड़ाकर।
नेता सब महलों में बैठे, मरते आज किसान। भक्तों ... ...
रोटी महंगी आज यहाँ पर और फोन है सस्ता।
समय पर करता सबसे नया बनाओ रास्ता।
लेकिन अब तो तुम्हें चाहिए एक नया हनुमान। भक्तों ... ...

भक्त– गुरूजी सरकार क्या चाहती वह तो हमें भी मालूम है? मुझे आप थोडा खोलकर बताइये न कि हम क्या करे। यह नया हनुमान आकर भी क्या करेगा।

साधु–

हम लेकर संकल्प चले हैं घर–घर अलख जगायेंगे।
ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे।
एक बराबर संविधान में होगे सब नर–नारी।
जाति–धर्म का भेद न होगा चाहत यही हमारी।
नेता अगर गलत होगा तो फौरन उसे हटायेंगे।
ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे।
लोकतंत्र पर रहे नियंत्रण, ऐसा नियम बनायें।
हम समाज में सामाजिक बन कर परिवार चलायें।
श्रम की मांग बढ़ेगी भाई ऐसा राज बनायेंगे।।
ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे ।।
करें मिलावट यहाँ न कोई सच्चे हो व्यापारी।
हो अपराधमुक्त यह भारत भागें भ्रष्टाचारी।

ग्राम सभा अब संसद होगी, हम कानून बनायेंगे ।।
करें मिलावट यहाँ न कोई सच्चे हो व्यापारी।
हो अपराधमुक्त यह भारत भागें भ्रष्टाचारी।
राम राज के हर सपने को हम साकार बनायेंगे।
ग्राम सभा अब संसद होगी हम कानून बनायेंगे।
इसके साथ ही में आज की सभा समाप्त करने की घोषणा करता हूँ–
(गीत समाप्त होता है)

(परदा गिरता है)

क्रमंशः...

भावी भारत का संविधान	सहयोग राशि ₹ 50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती। देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष	सहयोग राशि ₹ 50	श्रद्धेय मुनिजी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचारमंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देश व्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार	सहयोग राशि ₹ 50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक।
बस अब बहुत हो चुका	सहयोग राशि ₹ 50	व्यवस्था की खामियों एवं उस के समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जीने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठ भूमि को तैयार करती है।
मुनिमंथन	सहयोग राशि ₹ 10	श्रद्धेय मुनिजी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज	सहयोग राशि ₹ 10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता	सहयोग राशि ₹ 10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने पर मात्र ₹100 की आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। मात्र ₹100 और डाक खर्च अतिरिक्त देकर इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें– 8318621282, 7869250001, 9617079344